

॥ अथ श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितः परिभाषेन्दुशेखरः ॥

नत्वा साम्बं शिवं ब्रह्म नागेशः कुरुते सुधीः ।

बालानां सुखबोधाय परिभाषेन्दुशेखरम् ॥

प्राचीनवैयाकरणतन्त्रे वाचनिकान्यत्र पाणिनीयतन्त्रे ज्ञापकन्यायसिद्धानि
भाष्यवार्तिकयोरुपनिबद्धानि यानि परिभाषारूपाणि तानि व्याख्यायन्ते ॥

१ व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्

२ यथोद्देशं संज्ञापरिभाषम्

३ कार्यकालं संज्ञापरिभाषम्

४ अनेकान्ता अनुबन्धा इति

५ एकान्ताः

६ नानुबन्धकृतमनेकाल्त्वम्

७ नानुबन्धकृतमनेजन्तत्वम्

८ नानुबन्धकृतमसारूप्यम्

९ उभयगतिरिह भवति

१० कार्यमनुभवन् हि कार्यो निमित्ततया नाश्रीयते

११ यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्रहणेन गृह्यन्ते

१२ निर्दिश्यमानस्याऽऽदेशा भवन्ति

१३ यत्रानेकविधमान्तर्यं तत्र स्थानत आन्तर्यं बलीयः

१४ अर्थवद्ग्रहणे नानर्थकस्य

१५ गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसम्प्रत्ययः

१६ अनिनिस्मन्ग्रहणान्यर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति

१७ एकयोगनिर्दिष्टानां सह वा प्रवृत्तिः सह वा निवृत्तिः

१८ क्वचिदेकदेशोऽप्यनुवर्तते

१९ भाव्यमानेन सवर्णानां ग्रहणं न

२० भाव्यमानोऽप्युकारः सवर्णान् गृह्णाति

२१ वर्णाश्रये नास्ति प्रत्ययलक्षणम्

२२ उणादयोऽव्युत्पन्नानि प्रातिपदिकानि

२३ प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स विहितस्तदादेस्तदन्तस्य ग्रहणम्

२४ प्रत्ययग्रहणं चापञ्चम्याः

२५ उत्तरपदाधिकारे प्रत्ययग्रहणे न तदन्तग्रहणम्

२६ स्त्रीप्रत्यये चानुपसर्जने न

२७ संज्ञाविधौ प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणं नास्ति

२८ कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्

२९ पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदन्तस्य च

३० व्यपदेशिवदेकस्मिन्

- ३१ ग्रहणवता प्रातिपदिकेन तदन्तविधिर्नास्ति
३२ व्यपदेशिवद्भावोऽप्रातिपदिकेन
३३ यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे
३४ सर्वो द्वन्द्वो विभाषयैकवद्भवति
३५ सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते
३६ प्रकृतिवदनुकरणं भवति
३७ एकदेशविकृतमनन्यवत्
३८ पूर्वपरनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः
३९ पुनः प्रसङ्गविज्ञानात्सिद्धम्
४० सकृद्गतौ विप्रतिषेधे यद् बाधितं तद् बाधितमेव
४१ विकरणेभ्यो नियमो बलीयान्
४२ परान्नित्यं बलवत्
४३ शब्दान्तरस्य प्राप्नुवन्विधिरनित्यो भवति
४४ शब्दान्तरात् प्राप्नुवतः शब्दान्तरे प्राप्नुवतश्चानित्यत्वम्
४५ लक्षणान्तरेण प्राप्नुवन् विधिरनित्यः
४६ क्वचित्कृताकृतप्रसङ्गमात्रेणापि नित्यता
४७ यस्य च लक्षणान्तरेण निमित्तं विहन्यते न तदनित्यम्
४८ यस्य च लक्षणान्तरेण निमित्तं विहन्यते तदप्यनित्यम्
४९ स्वरभिन्नस्य प्राप्नुवन्विधिरनित्यो भवति
५० असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे
५१ नाजानन्तर्ये बहिष्ट्वप्रकल्पितः
५२ अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गो लुग् बाधते
५३ पूर्वोत्तरपदनिमित्तकार्यात् पूर्वमन्तरङ्गेऽप्येकादेशो न
५४ अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गो ल्यब्बाधते
५५ वार्णादाङ्गं बलीयो भवति
५६ अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः
५७ अन्तरङ्गादप्यवादो बलवान्
५८ येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति
५९ क्वचिदपवादविषयेऽप्युत्सर्गोऽभिनिविशत इति
६० पुरस्तादपवादाः अनन्तरान् विधीन् बाधन्ते, नोत्तरान्
६१ मध्येऽपवादाः पूर्वान् विधीन् बाधन्ते, नोत्तरान्
६२ अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वेति
६३ पूर्वं ह्यपवादा अभिनिविशन्ते पश्चादुत्सर्गाः
६४ प्रकल्प्य चापवादविषयं तत उत्सर्गोऽभिनिविशन्ते
६५ उपसञ्जनिष्यमाणनिमित्तोप्यपवाद उपसञ्जातनिमित्तमप्युत्सर्गं बाधत इति

- ६६ अपवादो यद्यन्यत्र चरितार्थस्तर्ह्यन्तरङ्गेण बाध्यते
६७ अभ्यासविकारेषु बाध्यबाधकभावो नास्ति
६८ ताच्छीलिकेषु वाऽसरूपविधिर्नास्ति
६९ क्तल्युट्त्तुमुन्खलर्थेषु वाऽसरूपविधिर्नास्ति
७० लादेशेषु वाऽसरूपविधिर्नास्ति
७१ उभयनिर्देशे पञ्चमीनिर्देशो बलीयान्
७२ प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम्
७३ विभक्तौ लिङ्गविशिष्टाग्रहणम्
७४ सूत्रे लिङ्गवचनमतन्त्रम्
७५ नञिवयुक्तमन्यसदृशाधिकरणे तथा ह्यर्थगतिः
७६ गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः
७७ साम्प्रतिकाभावे भूतपूर्वगतिः
७८ बहुव्रीहौ तद्गुणसंविज्ञानमपि
७९ चानुकृष्टं नोत्तरत्र
८० स्वरविधौ व्यञ्जनमविद्यमानवत्
८१ हल्स्वरप्राप्तौ व्यञ्जनमविद्यमानवत्
८२ निरकबन्धकग्रहणे न सानुबन्धकस्य
८३ तदनुबन्धकग्रहणे नातदनुबन्धकस्य
८४ क्वचित् स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्ते
८५ समासान्तविधिरनित्यः
८६ सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विधातस्य
८७ सन्नियोगशिष्टानामन्यतरापाय उभयोरप्यपायः
८८ ताच्छीलिके णेऽण्कृतानि भवन्ति
८९ धातोः कार्यमुच्यमानं तत्प्रत्यये भवति
९० तन्मध्यपतितस्तद्ग्रहणेन गृह्यते
९१ लुग्विकरणालुग्विकरणयोरलुग्विकरणस्य
९२ प्रकृतिग्रहणे ण्यधिकस्यापि ग्रहणम्
९३ अङ्गवृत्ते पुनर्वृत्तावविधिः
९४ संज्ञापूर्वकविधेरनित्यत्वम्
९५ आगमशास्त्रमनित्यम्
९६ गणकार्यमनित्यम्
९७ अनुदात्तेत्वलक्षणमात्मनेपदमनित्यम्
९८ नञ्घटितमनित्यम्
९९ आतिदेशिकमनित्यम्
१०० सर्वविधिभ्यो लोपविधिरिङ्गविधिश्च बलवान्

- १०१ प्रकृतिग्रहणे यङ्लुगन्तस्यापि ग्रहणम्
१०२ विधौ परिभाषोपतिष्ठते नानुवादे
१०३ उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी
१०४ अनन्त्यविकारेऽन्त्यसदेशस्य
१०५ नानर्थकेऽलोन्त्यविधिरनभ्यासविकारे
१०६ प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः
१०७ अवयवप्रसिद्धेः समुदायप्रसिद्धिर्बलीयसी
१०८ व्यवस्थितविभषयाऽपि कार्याणि क्रियन्ते
१०९ विधिनियमसम्भवे विधिरेव ज्यायान्
११० सामान्यातिदेशे विशेषानतिदेशः
१११ प्रत्ययाप्रत्यययोः प्रत्ययस्य ग्रहणम्
११२ सहचरितासहचरितयोः सहचरितस्यैव ग्रहणम्
११३ श्रुतानुमितयोः श्रुतसम्बन्धो बलवान्
११४ लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव ग्रहणम्
११५ गामादाग्रहणेष्वविशेषः
११६ प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तिः
११७ क्वचित्समुदायेऽपि
११८ अभेदका गुणाः
११९ बाधकान्येव निपातनानि
१२० पर्जन्यवल्लक्षणप्रवृत्तिः
१२१ निषेधाच्च बलीयांसः
१२२ अनिर्दिष्टार्थाः प्रत्ययाः स्वार्थे
१२३ योगविभागादिष्टसिद्धिः
१२४ पर्यायशब्दानां लाघवगौरवचर्चा नाद्रियते
१२५ ज्ञापकसिद्धं न सर्वत्र
१२६ पूर्वत्रासिद्धीयमद्वित्वे
१२७ एकस्या आकृतेश्चरितः प्रयोगो द्वितीयस्यास्तृतीयस्याश्च न भविष्यति
१२८ सम्प्रसारणं तदाश्रयं च कार्यं बलवत्
१२९ क्वचिद्वृत्तिः प्रकृतिं गृह्णाति
१३० औपदेशिकप्रायोगिकयोरौपदेशिकस्यैव ग्रहणम्
१३१ श्लिषा शपानुबन्धेन निर्दिष्टं यद् गणेन च । यत्रैकाजग्रहणं चैव पञ्चैतानि न यङ्लुकि ॥
१३२ पदगौरवाद्व्योगविभागो गरीयान्
१३३ अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः
॥ इति श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितः परिभाषेन्दुशेखरः ॥

সূত্র সংখ্যা	সংস্কৃত সূত্র (বাংলা লিপি)	বাংলা অর্থ (Meaning)
১	ব্যাখ্যানতো বিশেষপ্রতিপত্তির্নহি সন্দেহাদলঙ্ঘনম্	ব্যাখ্যা দ্বারা বিশেষ জ্ঞান লাভ করতে হবে; কেবল সন্দেহ থাকলেই তা অলঙ্ঘন (অসিদ্ধ নিয়ম) নয়। (অর্থাৎ, যেখানে সন্দেহ হবে সেখানে ভাষ্যকারদের ব্যাখ্যা অনুসরণ করতে হবে)।
২	যথোদ্দেশং সংজ্ঞাপরিভাষম্	সংজ্ঞা ও পরিভাষাগুলি যথোদ্দেশ (ব্যাকরণের শুরুতে স্থিরভাবে বিরাজ করে, কার্যকালে স্থান পরিবর্তন করে না)।
৩	কার্যকালং সংজ্ঞাপরিভাষম্	সংজ্ঞা ও পরিভাষাগুলি কার্যকাল (যখন কোনো কার্য করার প্রয়োজন হয়, তখন সেই কার্যক্ষেত্রে উপস্থিত হয়)।
৪	অনেকা ন্ত্যা অনুবন্ধা ইতি	অনুবন্ধগুলি (ইং বর্ণগুলি) অনেকান্ত (অর্থাৎ, তাদের অস্তিত্ব সব সময় থাকে না, কেবল বিশেষ উদ্দেশ্যেই থাকে)।
৫	একা ন্ত্যাঃ	অনুবন্ধগুলি একান্ত (অন্যদের মত)।

৬	ন্যা নুবন্ধকৃতমনেকাল ৎবম্	অনুবন্ধের কারণে কোনো আদেশ (Substitute) অনেক আল্ (বর্ণ)-বিশিষ্ট হয় না।
৭	ন্যা নুবন্ধকৃতমনেজন্তুৎবম্	অনুবন্ধের কারণে (এ, ঐ, ও, ঔ) দ্বারা অন্ত (শেষ) নয় এমন শব্দ অজন্তু (স্বরান্ত) হয় না।
৮	ন্যা নুবন্ধকৃতমসারু প ্যম্	অনুবন্ধের কারণে অসারুপ্য (অসদৃশতা) হয় না।
৯	উভয়গতিরিহ ভবতি	উভয় গতি (একসাথে একাধিক নিয়মের প্রয়োগ) এখানে সম্ভব হয়।
১০	কার্যমনুভবন্ হি কার্য্য নিমি ৎততয়া ন্যা শ্রীয়তে	কার্য (আদেশ/ substitution) অনুভবকারী কার্য্য (যাকে আদেশ করা হয়) নিমিত্ত (কারণ) হিসেবে গৃহীত হয় না।
১১	যদ্যা গম্যা স ৎদ্বুণীভূত্যা স ৎদগ্রহণে ন গৃহ্যন্তে	যে সকল আগম (Added elements) আসে, তারা যার আগম, তার অংশে পরিণত হয় এবং তাকে গ্রহণ করলেই আগমকেও গ্রহণ করা হয়।
১২	নির্দিশ্যমানস্য্যা 'া দেশে শা ভবন্তি	যে পদকে সরাসরি নির্দেশ করা হয়, তারই আদেশ

		(substitution) হয়, তদন্ত (সেই পদান্ত) পদের হয় না।
১৩	যত্রানেকরিধমা ত্তর্যং তত্র স্থা নত আ ত্তর্যং বলীয়ঃ	যেখানে অনেক প্রকার সাদৃশ্য (আন্তর্য) থাকে, সেখানে স্থানগত সাদৃশ্য (Place/Status) বেশি শক্তিশালী হয়।
১৪	অর্থব্রদগ্রহণে নানর্থকস্য	অর্থযুক্ত শব্দ গ্রহণ করা হলে, অনর্থক শব্দের গ্রহণ হয় না।
১৫	গৌণমুখ্যয়োর্মুখ্যে কার্য্যসম্প্রত্যয়ঃ	গৌণ এবং মুখ্য এর মধ্যে মুখ্যেই কার্য সম্পন্ন হয়।
১৬	অনিবস্মনগ্রহণান ্যর্থব্রতা চানার্থকে ন চ তদন্তরিধিং প্রয়োজয়ন্তি	অন, ইন্, অস্মন্ -যুক্ত যে গ্রহণগুলি (শব্দ) করা হয়, তা অর্থযুক্ত এবং অনর্থক উভয়ের সাথেই তদন্তবিধিকে (তদন্তের গ্রহণ) প্রযুক্ত করে।
১৭	একযোগনির্দিষ্টান্যাং সহ রা প্রবৃতিঃ সহ রা নিবৃতিঃ	একই সূত্রে নির্দেশিত নিয়মগুলির একসাথে প্রবৃতি (প্রয়োগ) হয়, অথবা একসাথে নিবৃতি (অপ্রয়োগ) হয়।
১৮	ক্চিদিদে ক দেশোহপ্যনুর্ততে	কোথাও কোথাও এক দেশও (সূত্রের অংশ) অনুবর্তন করে (পরের সূত্রে চলে আসে)।

১৯	ভাব্যমানে ন সৰ্গানাং গ্রহণং ন	ভাব্যমান (যা সূত্রের মাধ্যমে তৈরি হচ্ছে বা আসছে) বর্ণ দ্বারা সবর্ণের গ্রহণ হয় না।
২০	ভাব্যমানোহপ্যুকারঃ সৰ্গানা ন গ্ হ্ণা তি	ভাব্যমান হলেও উকার সবর্ণকে গ্রহণ করে। (১৯ নং সূত্রের ব্যতিক্রম)।
২১	বর্ণাশ্রয়ে ন্যা স্তি প্রত্যয়লক্ষণম্	বর্ণাশ্রিত কার্যে প্রত্যয়লক্ষণ (প্রত্যয় লোপের চিহ্ন) থাকে না (কাজ করে না)।
২২	উণা দয়োহব্যুৎপন্না নি প্রা তিপদিকা নি	উণাদি প্রত্যয়ান্ত শব্দগুলি মৌলিক প্রাতিপদিক (ব্যুৎপন্ন নয়)।
২৩	প্রত্যয়গ্রহণে যস্মা ত্ স বিহিতস্তদ্যা দেস ৎতদন্তস্য গ্রহণম্	প্রত্যয় গ্রহণ করা হলে, যার থেকে সেই প্রত্যয় বিহিত হয়েছে, সেই পদ এবং সেই পদান্ত শব্দের গ্রহণ করা হয়।
২৪	প্রত্যয়গ্রহণং চা পঞ্চ ম ্যাঃ	প্রত্যয় গ্রহণ (তদন্ত বিধি) পঞ্চমী বিভক্তি পর্যন্ত (অর্থাৎ পঞ্চমী পর্যন্ত সকল প্রত্যয়ের ক্ষেত্রে হয়)।
২৫	উত্তরাপদাধিকা রে প্রত্যয়গ্রহণে ন তদন্তগ্রহণম্	উত্তরপদ অধিকারে (আলোচনায়), প্রত্যয় গ্রহণ করা হলে তদন্ত গ্রহণ হয় না।

২৬	ক্ৰীপ্ৰত্যয়ে চানুপসৰ্জনে ন	ক্ৰীপ্ৰত্যয়ের ক্ষেত্রে এবং অনুপসর্জন (প্রধান) হলে তদন্ত গ্রহণ হয় না।
২৭	সংজ্ঞাবিধৌ প্রত্যয়গ্রহণে তদন্তগ্রহণং না স্তি	সংজ্ঞা বিধানে প্রত্যয় গ্রহণ করা হলে তদন্ত গ্রহণ হয় না।
২৮	কৃদগ্রহণে গতি কা রকপূর্বস্যাপি গ্রহণম্	কৃৎ প্রত্যয়ান্ত শব্দ গ্রহণ করা হলে গতি এবং কারক পূর্ব (আগে আছে এমন) শব্দেরও গ্রহণ হয়।
২৯	পদাঙ্গাধিক্যে তস্য চ তদন্তস্য চ	পদ এবং অঙ্গ -এর অধিকারে (আলোচনায়), সেই পদ বা অঙ্গ এবং সেই পদ বা অঙ্গের তদন্তেরও গ্রহণ করা হয়।
৩০	ব্যপদেশিরদেকস্মিন্	একটিতেও ব্যপদেশীবদ্ভাব (যেমন একটি পদেও তদ্বিশিষ্ট পদের মতো ব্যবহার) হয়।
৩১	গ্রহণরত্যা প্রাতিপদিকে ন তদন্তবিধির্না স্তি	নাম উল্লেখ করে যে প্রাতিপদিক গ্রহণ করা হয়, সেখানে তদ্বিশিষ্ট পদান্তের (তদন্ত) বিধি হয় না।
৩২	ব্যপদেশিবদ্ভাবোহপ্রা তিপদিকে ন	ব্যপদেশীবদ্ভাব অপ্রাতিপদিকের ক্ষেত্রেও হয়।

৩৩	যস্মিন্‌ব্রিধিস্তুদ্যা দ্যা ব্রহ্মগ্রহণে	যে স্থানে বিধি (নিয়ম) হচ্ছে, তা সেই আদ্যল্ (আদি বর্ণ) এর ক্ষেত্রে হয়।
৩৪	সর্বো দ্রব্ধো ব্রিভাষ্যৈ ক ব্রহ্মবতি	সমস্ত দ্বন্দ্ব ু সমা স বিকল্পে একবদ্ (একবচন) হয়।
৩৫	সর্বে ব্রিধয়শ্চন্দসি ব্রিকল্পান্তে	বেদে (ছন্দসি) সমস্ত নিয়ম বিকল্পে প্রযুক্ত হয়।
৩৬	প্রকৃতিরদনু করণং ভবতি	অনুকরণ প্রকৃতিরং (যেমন অনুকরণ করা হচ্ছে) হয়।
৩৭	একদেশবিকৃতমনন্যব্রং	এক অংশ বিকৃত হলেও তা অনন্যব্রং (মূল শব্দের মতোই গণ্য হবে)।
৩৮	পূর্বপরনিত্যা অন্তরাপব্যা দ্যা নামুত্তরোত্তরং বলীয়ঃ	পূর্ব, পর, নিত্য, অন্তরঙ্গ ও অপবাদ - এই নিয়মগুলির মধ্যে পরেরটি আগেরটির চেয়ে শক্তিশালী হয়।
৩৯	পুনঃ প্রসঙ্গব্রিজ্ঞা ন্যা ংসিদ্ধম্	পুনরায় প্রসঙ্গের জ্ঞান থাকার কারণে (কিছু কাজ) সিদ্ধ হয়।
৪০	সক্ দ্রতৌ ব্রিপ্রতিষেধে যদ্ ব্যা ধিতং তদ্ ব্যা ধিতমের	একবার কার্য হওয়ার পর বিরোধে যা বাধিত হয়, তা বাধিতই থাকে।

৪১	বিকরণেভ্যো নিয়মো বলীয়ান	বিকরণ (প্রত্যয়)-এর চেয়ে নিয়ম বেশি শক্তিশালী।
৪২	পরান্নি ংয়ং বলর ং	পর (পরবর্তী) নিয়মের চেয়ে নিত্য (সর্বদা প্রযোজ্য) নিয়ম বেশি শক্তিশালী।
৪৩	শব্দা ত্তরস্য প্রা প্লুরন্বিধি র নি ংয়ো ভবতি	শ ত্তর শব্দের প্রাপ্ত হওয়া নিয়ম অনিত্য (দুর্বল) হয়।
৪৪	শব্দা ত্তরা ত্ প্রা প্লুরতঃ শব্দা ত্তরে প্রা প্লুরতশ্চা নি ংয় ংবম্	শ ত্তর শব্দ থেকে প্রাপ্ত হওয়া এবং শ ত্তর শব্দে প্রাপ্ত হওয়া - এই দুটিই অনিত্য হয়।
৪৫	লক্ষণা ত্তরে ং প্রা প্লুরন্ বিধি র নি ংয়ঃ	লক্ষণাত্তর (অন্য সূত্র) দ্বারা প্রাপ্ত হওয়া নিয়ম অনিত্য হয়।
৪৬	ক্চি ংক্ তা ক্ ত প ্রসঙ্গমা ত্রে গা পি নি ংয়ত্যা	কোথাও কোথাও কৃত-কৃত প্রসঙ্গের কারণেও নিত্যতা হয়।
৪৭	যস্য চ লক্ষণা ত্তরে ং নিমি ংতং বিহন ্যতে ন তদনি ংয়ম্	লক্ষণাত্তর দ্বারা যার নিমিত্ত নষ্ট হয় না, তা অনিত্য নয়।
৪৮	যস্য চ লক্ষণা ত্তরে ং নিমি ংতং বিহন ্যতে তদপ ্যনি ংয়ম্	লক্ষণাত্তর দ্বারা যার নিমিত্ত নষ্ট হয়, তা-ও অনিত্য।

৪৯	স্বরভিন ্নস্য প্রা প্লুরন্ রিধি র নি ৎয়ো ভবতি	স্বর ভিন্ন (অন্য স্বর) যুক্ত শব্দের প্রাপ্ত হওয়া নিয়ম অনিত্য হয়।
৫০	অসিদ্ধং বহিরঙ্গমন্তরঙ্গে	অন্তরঙ্গ (Internal) কার্যের ক্ষেত্রে বহিরঙ্গ (External) কার্য অসিদ্ধ গণ্য হয়।
৫১	না জা নন ্তর্যো বহিষ ৎরপ্রক ৃ স্তিঃ	স্বর (অচ্) এর ব্যবধান না থাকলে বহিরঙ্গ স্ব কল্পনা করা হয় না।
৫২	অন্তরঙ্গানপি রিধীন বহিরঙ্গো লুগ্ বা ধতে	অন্তরঙ্গ নিয়মগুলিকেও বহিরঙ্গ লুপ্ (লোপ) বাধিত করে।
৫৩	পূর্বোত্তরপদমিতকার্য্যা ত্ পূর্বমন্তরঙ্গেহপ্যেকা দেশো ন	পূর্বপদ ও উত্তরপদ উভয়কেই নিমিত্ত করে যে কার্য হয়, তার আগে অন্তরঙ্গ হলেও একাদেশ হয় না।
৫৪	অন্তরঙ্গানপি রিধীন বহিরঙ্গো ল্যব্বা ধতে	অন্তরঙ্গ নিয়মগুলিকেও বহিরঙ্গ ল্যপ্ বাধিত করে।
৫৫	বর্ণাঙ্গা দ্যা ঙ্গ বলীয়ো ভবতি	বর্ণাঙ্গিত (Phonetic) কার্য অপেক্ষা অঙ্গাঙ্গিত (Morphological) কার্য অধিক শক্তিশালী হয়।

৫৬	অকৃতব্যুহাঃ প্যা নিনীয় ।	পাণিনি পন্থীরা অকৃতব্যুহ (থারাপ ফল আসার আগেই কার্য রোধ করেন)।
৫৭	অন্তরঙ্গা দপব্যা দো বলব্যা ন	অন্তরঙ্গ নিয়মের চেয়ে অপবাদ (ব্যতিক্রম) বেশি শক্তিশালী।
৫৮	যেন ন্যা প া ণ্ডে যো ব্রিধিরা রভ্যতে স তস্য বা ধকো ভবতি	যে নিয়মের প্রাপ্তি না হলে অন্য একটি নিয়ম আর স্ত করা হয়, সেই নিয়মটি পূর্ববর্তী নিয়মের বাধক (Exception) হয়।
৫৯	ক্চিদপব্যা দরিষয়েহপ্যু ৎসর্গোহভিন ব্রিশত ইতি	কোথাও কোথাও অপবাদ-বিষয়েও উৎসর্গ (সাধারণ নিয়ম) প্রযুক্ত হয়।
৬০	পুরুস্ত্যা দপব্যা দ্যাঃ অনন্তর া ন্ ব্রিধীন ব্যা ধন্তে, নো ত্তর া ন্	পুরুস্তাদপবাদগুলি (সূত্রের শুরুর দিকে ব্যতিক্রম) তার ঠিক অনন্তর (পরের) নিয়মগুলিকেই বাধিত করে, তার পরের নিয়মগুলিকে নয়।
৬১	মধ্য ্যেহপব্যা দ্যাঃ পূর্ব্যা ন ব্রিধীন ব্যা ধন্তে, নো ত্তর া ন্	মধ্যে স্থিত অপবাদগুলি তার পূর্বের নিয়মগুলিকে বাধিত করে, তার পরের নিয়মগুলিকে নয়।

৬২	অনন্তরস্য বিধিৰ্বা ভবতি প্রতিষেধো বেতি	অনন্তর (ঠিক পরের) নিয়মেরই বিধি (নিয়ম) বা প্রতিষেধ (নিষেধ) হয়।
৬৩	পূৰ্ব্বং হ্যপব্যা দা অভিন বিশন্তে প শ্চা দু ংসর্গাঃ	প্রথমে অপবাদগুলি প্রযুক্ত হয়, পরে উৎসর্গ (সাধারণ নিয়ম)।
৬৪	প্রকল্প য় চা পব্যা দবিশয়ং তত উৎসর্গোহভিন বিশন্তে	অপবাদ বিষয়কে কল্পনা করে, তারপর উৎসর্গ (সাধারণ নিয়ম) প্রযুক্ত হয়।
৬৫	উপসঞ্জনিষ্যমাণনিমি ৎতোপ য়পব্যা দ উপসজ্ঞা তনিমি ংতমপ য় ংসর্গং ব্যা ধত ইতি	উপস্থিত হতে যাওয়া নিমিত্তযুক্ত অপবাদও উপস্থিত নিমিত্তযুক্ত উৎসর্গকে বাধিত করে।
৬৬	অপব্যা দো যদ য়ন য়ত্র চরিত থস ংতর্হ য় ন ্তরঙ্গে ণ ব্যা ধ য়তে	অপবাদ যদি অন্য কোথাও চরিতার্থ হয়, তবে তা অন্তরঙ্গ দ্বারা বাধিত হয়।
৬৭	অভ্যাসা সরিক্যা রেষু ব্যা ধ ্যব্যা ধকভা রো ন্যা স্তি	অভ্যাস বিকারের ক্ষেত্রে বাধ্য-বাধক ভাব (বাধা দেওয়া-নেওয়া) নেই।
৬৮	তা ক্ষী লিকেষু ব্রা 'া সরু প বিধির্না স্তি	তাক্ষীলিক (স্বভাব)-যুক্ত প্রত্যয়ের ক্ষেত্রে অসরূপ বিধি (অসদৃশ নিয়ম) হয় না।

৬৯	ক্তল্যু ৎতু মু নখলর্থেষু ব্রা 'া সরু প রিধির্না স্তি	ক্ত, ল্যুট, তুমুন, থল্ অর্থযুক্ত প্রত্যয়ের ক্ষেত্রে অসরুপ বিধি হয় না।
৭০	লা দেশে যু ব্রা 'া সরু প রিধির্না স্তি	লাদেশ (আদেশ)-এর ক্ষেত্রে অসরুপ বিধি হয় না।
৭১	উভয়নির্দেশে পঞ্চ মীনির্দেশো বলীয়ান	উভয় নির্দেশ থাকলে পঞ্চমী বিভক্তির নির্দেশ বেশি শক্তিশালী।
৭২	প্রা তিপদিকগ্রহণে লিঙ্গবিশিষ্টস্য্যা পি গ্রহণম্	প্রাতিপদিক গ্রহণ করা হলে, লিঙ্গবিশিষ্ট শব্দেরও গ্রহণ হয়।
৭৩	বিভক্তৌ লিঙ্গবিশিষ্ট্যা গ্রহণম্	বিভক্তির ক্ষেত্রে লিঙ্গবিশিষ্ট শব্দের গ্রহণ হয় না।
৭৪	সূত্রে লিঙ্গরচনমতন্ত্রম্	সূত্রে লিঙ্গ ও বচন (সংখ্যা) অতন্ত্র (গৌণ বা অপ্রধান)।
৭৫	নঞ্জিযুক্তমন ্যসদৃশা ধিকরণে তথ্যা হ্যর্থগতিঃ	'নঞ্ ইব যুক্ত' পদটি অন্য সদৃশ অর্থের অধিকরণে প্রযুক্ত হয়।
৭৬	গতি কা রকোপপদ্যা ন্যা ং কৃ দ্ভিঃ সহ সমাসরচনং প্রা ক্ সুবু ৎপত্তেঃ	গতি, কারক ও উপপদের সাথে কৃৎ প্রত্যয়ান্ত পদের সমা স সুবুৎপত্তির আগে করতে হয়।

৭৭	সাম্প্রতি কা ভা রে ভূ তপ ূ ধ্বগতিঃ	সাম্প্রতিক (বর্তমান) ভাবের অভাব হলে ভূতপূর্ব গতি (আগে যা ছিল, তার ভিত্তিতে কার্য) হয়।
৭৮	বহরীহৌ তদ ংগসংবিজ্ঞা নমপি	বহরীহি সমা সে তদগুণসংবিজ্ঞান (যে গুণকে নিয়ে সমাস, সেই গুণও অর্থ বোঝায়) হয়।
৭৯	চা নুকু ষ্টং নো তর ত ং	'চ' দ্বারা যা আকৃষ্ট হয়, তা পরের সূত্রে যায় না।
৮০	স্বররিধৌ ব্যঞ্জনমবিদ্যমানর ৎ	স্বর বিধানের ক্ষেত্রে ব্যঞ্জন বর্ণ অবিদ্যমান (নেই)-এর মতো গণ্য হয়।
৮১	হল ্ স ্রপ া ষ্টৌ ব্যঞ্জনমবিদ্যমানর ৎ	হল (ব্যঞ্জন) ও স্বর প্রাপ্তির ক্ষেত্রে ব্যঞ্জন বর্ণ অবিদ্যমান-এর মতো গণ্য হয়।
৮২	নিবনু বন্ধকগ্রহণে ন স্যা নুবন্ধকস্য	নিরনুবন্ধক (ইং বর্ণ ছাড়া) গ্রহণ করা হলে স-অনুবন্ধকের গ্রহণ হয় না।
৮৩	তদনু বন্ধকগ্রহণে ন্যা তদন ু বন্ধকস্য	স-অনুবন্ধক গ্রহণ করা হলে নিরনুবন্ধকের গ্রহণ হয় না।

৮৪	ক্ৰচি ৭ স্বাা থিঁকাঃ প্রকৃতি তো লিঙ্গরচনান ্যতিরওন্তে	কোথাও কোথাও স্বা থিঁক প্রত্যয়গুলি প্রকৃতি থেকে লিঙ্গ ও বচনকে অতিক্রম করে।
৮৫	সমা সা ন্তরিধি র নি ৭য়ঃ	সমা সান ্ত বিধি অনিত্য (ঐচ্ছিক)।
৮৬	সন্নিপাা তলক্ষণো রিধি র নিমি ৭তং ত দ্বিখাা তস্য	সন্নিপাতলক্ষণ বিধি (ঘনিষ্ঠ সান্নিধ্যের কারণে সৃষ্ট) তার বিঘাতক কার্যের নিমিত্ত হতে পারে না।
৮৭	সন্নিয়োগশিষ্টাা নামন ্যতরাা পাা য় উ ভয়োরা প ্যপাা য়ঃ	সন্নিয়োগশিষ্ট (একসাথে বিহিত) এর মধ্যে একটার অপায় (নষ্ট হওয়া) হলে, উভয়েরই অপায় হয়।
৮৮	তাা ক্ষী লিকে গেহণ ্কৃ তা নি ভবন্তি	তাক্ষীলিক 'ণ্' প্রত্যয়ের ক্ষেত্রে অণ্ প্রত্যয় দ্বারা কৃত কার্য হয়।
৮৯	ধাা তোঃ কার্য্যমূ চ্যমাা নং ত ৭প ্রত্যয়ে ভবতি	ধাতুর কার্য উ চ্যমান হলে, তা সেই প্রত্যয়ে হয়।
৯০	তন্মধ ্যপতিতস ৭তদগ্রহণে ন গৃ হ ্যতে	তার মাঝখানে পতিত হলেও সে তার গ্রহণের মাধ্যমে গৃহীত হয়।

৯১	লু গ্ ব্রিকরণা লু গ্ ব্রিকরণয়োরা লু গ্ ব্রিকরণস্য	লুক্-বিকরণ (লুক্ প্রত্যয় লোপ) এবং অলুক্-বিকরণ এর মধ্যে অলুক্-বিকরণের (যেখানে লোপ হয় না) কার্য হয়।
৯২	প্রকৃতিগ্রহণে ন্যধিকস্যা পি গ্রহণম্	প্রকৃতি গ্রহণ করা হলে ন্যধিক (ন্য প্রত্যয় যুক্ত) শব্দেরও গ্রহণ হয়।
৯৩	অঙ্গবৃত্তে পুনর্বৃত্তা ব্রিধিঃ	অঙ্গকার্য একবার প্রবৃত্ত হওয়ার পর পুনরায় প্রবৃত্ত হলে সেই কার্যের অবিধি (পুনঃপ্রয়োগ হবে না)।
৯৪	সংজ্ঞাপূর্বকব্রিধে র নিত্য ংবম্	সংজ্ঞা দ্বারা যা সিদ্ধ হয়, সেই পূর্বক বিধিটি অনিত্য (দুর্বল)।
৯৫	আগমশা স ংরমনি ংয়ম্	আগম শাস্ত্র অনিত্য।
৯৬	গণকার্যমনি ংয়ম্	গণকার্য্য (ধাতুগণ সংক্রান্ত কাজ) অনিত্য।
৯৭	অন ু দ্যা ত্তে ং ংবলক্ষণা মা ংমনে পদমনি ংয়ম্	অনুদাত্ত ইং-চিহ্নের কারণে প্রাপ্ত আত্মনেপদ অনিত্য।
৯৮	নঞঘটিত ম নি ংয়ম্	নঞ (নিষেধ)-এর দ্বারা গঠিত নিয়ম অনিত্য।

৯৯	আ তি দে শিক ম নি ংয়ম্	আতিদেশিক (অন্যের গুণ আরোপকারী) বিধি অনিত্য।
১০০	সৰ্ববিধিভ্যো লোপবিধি রিভিধিষ্চ বলবান	সমস্ত নিয়ম অপেক্ষা লোপ-বিধি এবং ইড-আগম-বিধি অধিক শক্তিশালী।
১০১	প্রকৃতিগ্রহণে যঙলুগন্তস্যা পি গ্রহণম্	প্রকৃতি (ধাতু) গ্রহণ করা হলে, যঙলুগন্ত (যঙ প্রত্যয়ের লোপ হওয়া ধাতু)-এরও গ্রহণ হয়।
১০২	রিধৌ পরিভাষোপতিষ্ঠতে ন্যা নুব্যা দে	পরিভাষা বিধি (কোনো কিছু করার নিয়ম)-এ উপস্থিত হয়, অনুবাদ (যা বিদ্যমান তার বর্ণনা)-এ নয়।
১০৩	উপপদবিভক্তেঃ ক্যা রকরিভক্তিৰ্বলীয়াসী	উপপদ-বিভক্তি অপেক্ষা কারক-বিভক্তি অধিক শক্তিশালী।
১০৪	অনন ংয়রিক্যা রেহন ংয়সদে শস্য	অন ংয় (শেষ নয় এমন) বিকার (পরিবর্তন)-এর ক্ষেত্রে অন ংয়সদেশের (শেষের কাছাকাছি) কার্য হয়।
১০৫	ন্যা নন থে কোহলো ন ংয়বিধি র নন ্ন ্ভ ্যা সরিক্যা রে	অনর্থক পদে অন ংয় (শেষ বর্ণ) বিধি এবং অনভ্যাস বিকার (অভ্যাস বিকৃত নয় এমন) হয় না।

১০৬	প্রধানা না প ্রধানা নয়োঃ প্রধানা নে কার্য্যসম্প্রত্যয়ঃ	প্রধান ও অপ্রধান এর মধ্যে প্রধানাই কার্য সম্পন্ন হয়।
১০৭	অবয়বপ্রসিদ্ধিঃ সম ু দা য়প ্রসিদ্ধিবর্লীয়সী	অবয়বপ্রসিদ্ধি (অংশের অর্থ) অপেক্ষা সম ু দা য়প ্রসিদ্ধি (সমগ্রের অর্থ) অধিক শক্তিশালী।
১০৮	ব্যবস্থিতরিভষয়া 'া পি কার্য্যা গি ক্রিয়ন্তে	ব্যবস্থিত বিকল্প (নির্দিষ্ট ক্ষেত্রে ঐচ্ছিক বিকল্প)-এর মাধ্যমেও কার্য করা হয়।
১০৯	বিধিনিয়মসম্বন্ধে বিধির জ ্য্যা য়ান	বিধি (নিয়ম) ও নিয়ম (সংকোচন) উভয়ের সম্ভাবনা থাকলে বিধিই (নিয়ম) শ্রেষ্ঠ।
১১০	স্যা মান্য্যা তিশেদে বিশেষ্যা নতিদেশে	সাধারণের অতিদেশ (সাদৃশ্য বিধান) করলে, বিশেষের অতিদেশ হয় না।
১১১	প্রত্যয়া প ্রত্যয়য়োঃ প্রত্যয়স্য গ্রহণম্	প্রত্যয় এবং অপ্রত্যয় (প্রত্যয় নয় এমন) -এর মধ্যে প্রত্যয়েরই গ্রহণ হয়।
১১২	সহচরিতাসহচরিতয়োঃ সহচরিতসৈ ব্র গ্রহণম্	সহচরিত এবং অসহচরিত -এর মধ্যে সহচরিতেরই গ্রহণ হয়।

১১৩	শ্রুতানুমিতয়োঃ শ্রুতসম্বন্ধো বলবান	শ্রুত (সরাসরি উল্লেখ করা) এবং অনুমিত (অনুমান দ্বারা প্রাপ্ত) -এর মধ্যে শ্রুতসম্বন্ধই বেশি শক্তিশালী।
১১৪	লক্ষণপ্রতিপাদক ্তয়োঃ প্রতিপাদক ্তসৈ ব্র গ্রহণম্	লক্ষণ (সাধারণ সূত্র) দ্বারা প্রাপ্ত এবং প্রতিপদোক্ত (নির্দিষ্টভাবে সূত্র দ্বারা বলা) -এর মধ্যে প্রতিপদোক্তেরই গ্রহণ হয়।
১১৫	গা মা দা গ্রহণেষ বিশেষঃ	গা, মা, দা দ্বারা গঠিত গ্রহণগুলিতে কোনো বিশেষত্ব (পার্থক্য) নেই।
১১৬	প্রত্যেকং ব্রাক ্যপরিসমাপ্তিঃ	প্রত্যেকটি বাক্যের (বা পদের) পরিসমাপ্তি (কার্য) হয়।
১১৭	ক্চিৎ সম ু দা য়েহপি	কোথাও কোথাও সম ু দা য়েও (সমগ্রেও) বাক্য পরিসমাপ্তি হয়।
১১৮	অভেদকা গুণাঃ	গুণগুলি অভেদক (যেমন, স্বর ও বচন)।
১১৯	ব্যাধকান্যে ব্র নিপাতনা নি	নিপাতনগুলি বাধকই হয়।

১২০	পৰ্জন্যবল্লফণপ্রবৃতিঃ	নিয়মগুলির প্রবৃতি (প্রয়োগ) পৰ্জন্য (বৃষ্টি)-এর মতো হয় (সর্বত্র সমানভাবে প্রযুক্ত হয়)।
১২১	নিষেধা ঙ্গ বলীয়া সঃ	নিষেধ-বিধিও (নিবারণ) শক্তিশালী।
১২২	অনির্দিষ্টা থাঃ প্রত্যায়াঃ স্বা থে	অনির্দিষ্ট অর্থযুক্ত প্রত্যয়গুলি স্বা থে (নিজের অর্থে) প্রযুক্ত হয়।
১২৩	যোগবিভাগা দিষ্টসিদ্ধিঃ	যোগবিভাগ (একটি সূত্রে ভেঙে একাধিক সূত্রে বিভক্ত করা)-এর মাধ্যমে ইষ্টসিদ্ধি (বাঞ্চিত ফলের প্রাপ্তি) হয়।
১২৪	পর্যা য়শব্দা না ং লা ঘরগৌ র রচ্যা না দ্রিয়তে	পর্যা য় শব্দের লাঘব ও গৌরব (সংক্ষিপ্ততা বা দৈর্ঘ্য) নিয়ে আলোচনা করা হয় না।
১২৫	জ্ঞাপকসিদ্ধং ন সর্বত্র ং	জ্ঞাপক (পরোক্ষ প্রমাণ) দ্বারা সিদ্ধ নিয়ম সব সময় সব জায়গায় প্রযুক্ত হয় না।
১২৬	পূর্বত্রাসিদ্ধীয়মদ ্রি ংরে	পূর্বত্রাসিদ্ধীয়ম্ (ব্যাকরণের একটি ভাগ) দ্বিষ (পুনরাবৃতি)-এর ক্ষেত্রে প্রযোজ্য নয়।

১২৭	একস্যা আ ক ু তে শ্চরিতঃ প্রয়োগো দ্বিতীয়স্যা স ৎ ত ু তীয়স্যা শ্চ ন ভবিষ ্যতি	একটি আকৃতির (শব্দরূপ) প্রয়োগ একবার চরিত হলে, দ্বিতীয় ও তৃতীয় আকৃতির ক্ষেত্রে তা হয় না।
১২৮	সম্প্রসারণং তদাশ্রয়ং চ কার্যং বলবৎ	সম্প্রসারণ (যন্ থেকে ই, উ, ঋ, ঌ হওয়া) এবং তদাশ্রিত কার্য শক্তিশালী।
১২৯	কচিদ্রক ু তিঃ প্রক ু তি ং গৃহ্যতি	কোথাও কোথাও বিকৃতি (পরিবর্তিত রূপ) প্রকৃতিকে (মূল রূপ) গ্রহণ করে।
১৩০	ঔপদেশিকপত্রা যোগিকয়োরাপদেশিস ংক্যৈবগ্রহণম্	ঔপদেশিক (আদি উপদেশের দ্বারা প্রাপ্ত) এবং যোগিক (প্রয়োগের দ্বারা প্রাপ্ত) -এর মধ্যে ঔপদেশিকেরই গ্রহণ হয়।
১৩১	শ ৎতিপাশপান ুবন্ধে ন নির্দিষ্টং যদগণেন চ। যত্রৈকাঙ্গগ্রহণং চৈব পশ্চৈতানিনয়ঙ্লুকি ॥	ষ্টিপ্, শপ্, অনুবন্ধ (ইং), গণ এবং এক অচ্ (এক স্বর)-এর গ্রহণ - এই পাঁচটি নিয়ম যঙ্লুক্ (যেখানে যঙ্ প্রত্যয়ের লোপ হয়) -এর ক্ষেত্রে প্রযোজ্য হয় না।
১৩২	পদগৌরব্যা দ্যোগবিভাগো গরীয়া ন	পদগৌরবের (শব্দের বিশালতা) জন্য যোগবিভাগ (সূত্র বিভাজন) গুরুত্বপূর্ণ।

১৩৩	অৰ্দ্ধম্যা ত্ৰা লা ঘৰেন পুত্ৰো ৎসবং মন্যন্তে বৈয়াকরণাঃ	অৰ্ধ মাত্রার লাঘব (সংক্ষেপ)-কে বৈয়াকরণগণ পুত্ৰোৎসবের মতো মনে করেন (সংক্ষিপ্ততার গুরুত্ব বোঝাতে)।
-----	--	--